अध्याय - एक

भूमंडलीकरण के विविध पहलू

1.1. भूमण्डलीकरण का अर्थ :-

आज चारों तरफ 'भूमण्डलीकरण' 'ग्लोबलाइजेशन' और 'वैश्वीकरण' आदि शब्दों की ही गूँज सुनाई पड़ती है। आखिर इन शब्दों का क्या अर्थ है? क्यों इन शब्दों की धूम मची हुई है?

'भूमण्डलीकरण', 'ग्लोबलाइजेशन', 'वैश्वीकरण', 'जगतीकरण', 'ग्लोबल-विलेज' आदि शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं। इन सभी का एक सामान्य-सा अर्थ यह निकलता है कि, - पूरा विश्व आज एक गाँव की भाँति प्रतीत होता है। आधुनिक युग में मानव ने अपने परिश्रम के बल पर विज्ञान, जनसंचार औद्योगिक-क्रांति, संचार के साधनों और सूचना क्रांति के कारण इतना विकास कर लिया है कि उसने सभी देशों की सीमाओं का अतिक्रमण कर दिया है।

अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द को हिन्दी में 'भूमण्डलीकरण' और 'वैश्वीकरण' शब्दों से इंगित किया जाता है। सामान्य रूप से इसका तात्पर्य ऐसी परिघटना से है जिसका परिदृश्य वैश्विक हो और जिसका सम्बन्ध विश्व के समस्त राष्ट्रों, समाजों और समुदायों से हो। पारम्परिक रूप में हमारे यहाँ - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'

Scanned with CamScanner

के रूप में यह अवधारणा मानव जाति के इतिहास के साथ चली आई है जिसमें समस्त विश्व की कल्पना एक परिवार के रूप में की गई है।

समसामयिक 'भूमण्डलीकरण' की अवधारणा आधुनिक जीवन की परिघटना है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परम्परागत अवधारणा से बिल्कुल अलग है और बिलकुल भिन्न अर्थ लिए हुए है। आज का 'भूमण्डलीकरण' एक ऐसी आर्थिक परिघटना है जिसमें वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण संभव हुआ है। साधारण शब्दों में 'भूमण्डलीकरण' का अर्थ है - किसी देश की अर्थ-व्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना।[1] भारतीय संदर्भ में इसका अर्थ है - विदेशी कंपनियों को भारत की विभिन्न गतिविधियों में निवेश करने की अनुमति देकर अर्थ-व्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोलना। विदेशी विनिमय अधिनियम जैसे कानूनों को धीरे-धीरे समाप्त करके बहुराष्ट्रीय निगमों को देश में आने व निवेश की सुविधाएँ प्रदान करना - भावात्मक प्रतिबंधों के स्थान पर धीरे-धीरे प्रशुल्कों को समाप्त करना जिसमें आयात उदारीकरण कार्यक्रमों को व्यापक आधार पर लागू किया जा सके तथा कई तरह के निर्यात प्रोत्साहनों के स्थान पर विनिमय दर में परिवर्तन द्वारा निर्यात को प्रोत्साहन देना।[2]

---

1. बिजेन्द्र कुमार - हिंदी पत्रकारिता और भूमण्डलीकरण - पृष्ठ - २३
2. एस. के. पुरी - भारतीय अर्थव्यवस्था, पृ० - 548

Scanned with CamScanner

आर्थिक क्रिया-व्यापार केन्द्रित 'भूमण्डलीकरण' में सम्पूर्ण विश्व का मानवीय विकास और सुख-समृद्धि का प्रगट लक्ष्य है। अतः इसमें विश्व व्यापार को प्रेरित करने के लिये ऐसे नियमों, सिद्धांतों और संस्थाओं की रचना की जाती है जिनका चरित्र सार्वभौमिक होता है। अतः 'भूमण्डलीकरण' का सीधा अर्थ है विश्व बाजारवाद के आर्थिक नियम और सिद्धांत। [1]

वस्तुतः 'भूमण्डलीकरण' ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विश्व के एक क्षेत्र में घटित घटनाओं निर्णयों और गतिविधियों के विश्व के दूसरे क्षेत्र में सार्थक परिणाम निकलते हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्थाएँ परस्पर नजदीक आती हैं, उनका एकीकरण होता है जिसके परिणामस्वरूप विश्व व्यापार, वित्त, निवेश तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादन नेटवर्क का विस्तार होता है। [2]

भारत में 'प्रभाष जोशी' 'भूमण्डलीकरण' को निजीकरण व उदारीकरण को बढ़ाने वाली प्रवृत्ति के रूप में देखते हैं उनके अनुसार-'भूमण्डलीकरण' की प्रक्रिया अनिवार्य और प्राथमिक रूप से आर्थिक प्रक्रिया है। हमने वे बंधन, मर्यादाएँ और सीमाएं छोड़ी जो हमारी अर्थव्यवस्था को अपनी ही बनाए हुई थी तो इसे उदारीकरण कहा गया और जो देश के जो उद्योग व्यापार सरकार के नियंत्रण

---

1. दैनिक हिन्दुस्तान (22-10-2002) लेख - भूमण्डलीकरण से जुड़े धर्म संस्कृति के प्रश्न
2. पी. जगदीश गांधी - ग्लोबल इंडियन इकानामी - कंटेम्परेरी इश्यूज एंड इट्स पर्सपेक्टिव - पृष्ठ - 171

Scanned with CamScanner

में थे उनको मौलिकयत उद्योगपतियों और व्यापारियों को दे दी जाए तो वह निजीकरण हो जाता है। और 'भूमण्डलीकरण' आर्थिक के बाद तकनीकी प्रक्रिया है। यानी संचार के क्षेत्र में ऐसी तकनीक विकसित हो गई है कि संसार के किसी भी कोने में कभी भी कुछ भी हो रहा हो, उसे प्रत्यक्ष होते हुए कहीं भी देखा जा सकता है। यानी संचार की तकनीक ने काल और स्थान की सीमाओं के और गति को बेमानी कर दिया है। [1]

'भूमण्डलीकरण' को लेकर बाजारवाद का हावी होने का खतरा निरंतर जताया जाता रहा है. मीडिया विश्लेषक 'सुधीश पचौरी' 'भूमण्डलीकरण' को विश्व पूंजी का निरंकुश रूप मानते हैं उनके अनुसार 'भूमंडलीकरण' विश्व पूंजी का निरंकुशतावादी रूप है। व्यापार संगठन और पेटेंटों के नियंत्रण के रूप में पूंजीवाद ने बौद्धिक संपदा का अपना आखिरी नियंत्रण कायम कर लिया है। .... विश्व भर को बाजार बनाकर पूंजीवाद ने दुनिया भर के मनुष्य को उपभोक्तावाद में बदल दिया। उपभोक्तावाद 'भूमंडलीकरण' का सांस्कृतिक सार है। [2]

---

1. जनसत्ता (1.09.2002) सम्पादकीय
2. सुधीश पचौरी - उत्तर आधुनिक प्रस्थान बिंदु (उपभोक्ता संस्कृति के चिन्ह)

Scanned with CamScanner

'कार्ल मार्क्स' ने विश्व बाजारवाद की इस प्रवृत्ति को बहुत पहले ही पहचान लिया था। उन्होंने 'भूमण्डलीकरण' के ऐतिहासिक सन्दर्भों को पहचान करते हुए विश्व पूंजीवाद के सन्दर्भ में 'भूमण्डलीकरण' के स्वरूप और उसकी विस्तारवादी प्रवृत्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि - अपने माल के लिए लगातार बढ़ते बाजार की जरूरत हर जगह बुर्जुआ जो को ग्लोब पर में दौड़ती है वह हर जगह अड्डा जमाता है। हर जगह पहुँचता है और हर वहीं अपने सम्बन्ध बनाता है। विश्व बाजार के शोषण के जरिए उत्पादन और उपभोग को भूमंडलीय (कोस्मोपोलेटिन) रूप दे चुका है। पुरानी जरूरतें जिनको स्थानीय उत्पादों से संतुष्ट किया जाता था, हम नयी जरूरतों को पाते हैं जिनके संतोष के लिए दूरदराज जाहों के उत्पाद की जरूरत होती है। पुराने ढंग की स्थानीय संकुचित स्वांत और स्वात्मनिर्भरता की जगह हम हर क्षेत्र में नया संवाद देखते हैं; राष्ट्रों की विश्वस्तरीय आत्मनिर्भरता देखते हैं। जिस प्रकार यह संवाद भौतिक चीजों में होता है उसी प्रकार भौतिक उत्पाद में भी होता है। अलग-अलग राष्ट्रों के भौतिक उत्पाद सबकी आम सम्पत्ति बन जाते हैं, [1] मार्क्स ने 'भूमंडलीकरण' का पहला नक्शा खींचा है, उन्होंने 19 वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं सदी के प्रारम्भ में उपनिवेशवादी देशों की बौद्धिक उपस्थिति और उनके शोषक स्वरूप के ऐतिहासिक सन्दर्भों को ध्यान में रखकर ही पूंजीवाद की भूमंडलीय भूमिका को उजागर किया है, जिसमें भूमंडलीय पूंजी केवल आर्थिक उत्पाद तक केन्द्रित नहीं रहती बल्कि वह बौद्धिक उत्पाद (समाज-संस्कृति) तक सभी क्षेत्रों को अपने दायरे में खींच लेती है। 'भूमंडलीकरण' का समकालीन परिप्रेक्ष्य इस तथ्य की पुष्टि करता है। 'भूमंडलीकरण' के प्रमुख समर्थक 'जगदीश भगवती' इसे केवल आर्थिक क्षेत्र तक

1. कार्ल मार्क्स - सेलेक्टेड वर्क्स - जिल्द 6 - पृष्ठ - 487-88

Scanned with CamScanner

सीमित रखते हुए परिभाषित करते हैं, उनके अनुसार 'भूमंडलीकरण' के कई निहितार्थ हैं लेकिन मेरा मुख्य आशय यहाँ आर्थिक भूमंडलीकरण तक सीमित है। भूमंडलीकरण से मेरा तात्पर्य ही आर्थिक भूमंडलीकरण है आर्थिक भूमंडलीकरण से तात्पर्य राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्थाओं के व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और निगम द्वारा) अल्पावधि वित्तीय प्रवाह अंतर्राष्ट्रीय श्रम संचरण और तकनीकी प्रवाह के द्वारा वैश्विक अर्थ-व्यवस्था में स्वीकृत होने से है। (1)

आज 'भूमंडलीकरण' शब्द का प्रयोग कई तरह से हुआ है। शाब्दिक अर्थ तो है कि राष्ट्रों के बीच भौगोलिक दूरियाँ कम हो गई हैं। आज भौगोलिक दूरियाँ बेमानी लगती हैं। अब कोई देश अपना नुकसान करके ही शेष विश्व से खुद को अलग-थलग रख सकता है। 'भूमंडलीकरण' का दूसरा अर्थ ठीक इसका उल्टा निकाला जा रहा है। इसके अनुसार यह देशी हितों की जगह दूसरे देशों और बहुराष्ट्रीय निगमों के हितों को ऊपर रखने वाले नीतिगत बदलाव का नाम है। यह अंदेशा जाहिर किया जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और पूंजी निवेश के लिए देश के दरवाजे खोलने का मतलब गरीब और अमीर देशों को बकरी और बाघ की तरह एक ही घाट का पानी पीने की व्यवस्था करना है और ऐसी दोस्ती में अमीर देश गरीब देशों से मुनाफा लेंगे ही। राजनीतिक अर्थ में विश्व व्यापार में भागीदारी बढ़ाने का मतलब अमीर देशों पर निर्भरता बढ़ाना है, जो अन्तत: राजनीतिक निर्भरता और सामाजिक राजनीतिक कीमत चुकाने तक जाता है। (2)

---

1. जगदीश भगवती - इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन - पृ० - 3
~~2. प्रभा खेतान - बाजार और बाजार के खिलाफ - (भूमंडलीकरण और स्त्री के प्रश्न - पृ० 13-14)~~
2. बिमल जालान - भारतीय अर्थव्यवस्था 21 वीं सदी की ओर